Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 1, January -March 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली, शैक्षिक संसाधन, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

शोधकर्ता
प्रताप कुमार सिकदार
Email. Id. pratapksikdar@gmail.com

शोध पर्यवेक्षक
प्रो0 कोमल यादव
प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग
एन.आर.ई.सी. कॉलिज, खुर्जा (उ0प्र0)

https://doi.org/10.5281/zenodo.21312652

सार :- *प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अधिगम या सीखने की प्रक्रिया बराबर चलती है जिस प्रकार व्यक्ति को विभिन्न कार्यो के लिये विभिन्न क्षमताएँ प्रकति प्रकृति प्रदत्त होती है ठीक उसी प्रकार अधिगम की भी क्षमता मनुष्य को प्राप्त होती है। अधिगम शैली वह मार्ग है जिसके द्वारा व्यक्ति अपना ध्यान विषय पर केन्द्रित करता है तथा नये और कठिन प्रश्नो एवं कौशलो को अपने मस्तिष्क में संग्रहित कर लेता है। प्रस्तुत शोध पत्र माध्यामिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियो की अधिगम शैली के सबंध में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। बालक की जैसी अधिगम शैली होगी वेंसी आदतें होगीं उसी के अनुरूप उसकी रूचि होगी मूलतः ये सब शैक्षिक उपलब्धि पर निर्भर करता है।*

मुख्य शब्द :- अधिगम शैली, शैक्षिक संसाधन, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना :- शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मानव की जन्मजात भाक्तियों का विकास करके उसके ज्ञान, कला कौशल में वृद्धि एंव व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य सुसंस्कृत एंव योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह प्रक्रिया मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्यु पर्यन्त तक चलती रहती है। यदि समान रूप से देखे तो शिक्षा की यह प्रक्रिया सदैव एंव आजीवन अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा समाज में परिवर्तन लाने का सशक्त माध्यम है। शिक्षा ही समाज में व्याप्त बुराइयों, अन्ध–विश्वासों, कुप्रथाओं आदि का परित्याग करके, सामाजिक परिवर्तन का आधार तैयार करके, सामाजिक प्रगति में अमूल्य योगदान करती है। अतः शिक्षा विकास की वह प्रक्रिया है जिसमें मनुश्य भौशव काल से प्रौढ.काल तक विकास करता है और जिसके द्वारा वह धीरे–धीरे अपने को अनेक प्रकार से प्राकृतिक सामाजिक और आध्यात्मिक पर्यावरण के अनुकूल बनाता है। शिक्षा आमतौर पर आजीवन, स्थिर और साथ ही हमेशा समायोजन का प्रयास है। भोजन, वस्त्र और आवास के ठीक बाद शिक्षा मनुष्य की अगली आवश्यकता होगी। कड़े विरोध का सामन करने के लिए शिक्षा निश्चित रूप से शक्तिशाली साधन है जिसके द्वारा पुरुष जीवनशैली के साथ जीवन के हर मोड़ पर डटकर सामान करेगा। शिक्षा अच्छे लोगों से जुड़ी एक तकनीक विकसित करने और उत्कृष्ट मनुष्यों से जुड़ने हेतु बढ़ावा देने के लिए समुदाय के साथ यथेष्ट परिवर्तन करने के ढंग प्रदान करती है। शिक्षा का उद्देश्य आमतौर पर ज्ञान प्राप्त करना, नैतिक गुणों और मूल्यों को विकसित करना और विशेष रूप से प्रौद्योगिकी में विशेष विशेषज्ञता प्राप्त करना है। शिक्षा एक बच्चे को वास्तव में मानसिक और सामाजिक रूप से भविष्य की जीवनशैली के भीतर कार्य से जुड़ी दुनिया के लिए तैयार करती है। शिक्षा को आमतौर पर समुदाय से जुड़ी नींव के रूप में देखा जाता है। जो आमतौर पर वित्तीय सफलता, सामाजिक समृद्धि और राजनीतिक स्थिरता पैदा करती है। शिक्षा समुदाय के भीतर आदर्शों को प्रस्तुत करने के उपकरण के रूप में कार्य करती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :- प्रस्तुत शोध कार्य कई दृष्टि से आवश्यक तथा महत्वपूर्ण होगा। इसका लाभ माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के अधिगम शैली, शैक्षिक संसाधन व संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के परिप्रेक्ष्य में उपलब्धि प्रेरणा से होगा। एक विद्यालय के प्रशासन में पर्याप्त और उपयुक्त संसाधन महत्वपूर्ण हैं। इन संसाधनों का उचित प्रबंधन और उपयोग न केवल मानव संसाधन के मनोबल को बढ़ावा देगा जो स्कूल प्रणाली में अन्य गतिविधियों का समन्वय करता है बल्कि लक्ष्यों की प्राप्ति भी सुनिश्चित करता है। शिक्षा संसाधनों की उपलब्धता स्कूल प्रबंधन

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 1, January -March 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

को प्रभावी और कुशल बनाती है जिससे शिक्षा प्रणाली के उत्पादन में वृद्धि होती है। प्रभावी स्कूल प्रशासन कुशल शिक्षण प्रक्रिया की ओर ले जाता है जिससे गुणवत्तापूर्ण परिणाम प्राप्त होंगे।

किसी भी विद्यार्थी का शैक्षिक उपलब्धि उस विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता एवं सफलता का प्रतिविम्ब होता है दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि विद्यार्थी के शैक्षिक उपलब्धि के बारे में जानकारी प्राप्त करके उस विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता एवं सफलता का अनुमान बहुत आसानी से लगाया जा सकता है बच्चे ही राष्ट्र के धरोहर होते हैं तथा किसी देश का भविष्य उस देश की शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षित बच्चे ही होते है। बालकों के विकास पर ही देश का विकास एवं प्रगति निर्भर करता है। एक छात्र के अधिगम को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक होते हैं जिनमें अधिगम शैली, शैक्षिक संसाधन, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, शैक्षिक उपलब्धि आदि प्रमुख हैं। इनको विस्तृत अर्थ में समझना आवश्यक है।

शोध समस्या कथन :- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली, शैक्षिक संसाधन, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

शोध अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :- प्रस्तुत अध्ययन में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनका स्पष्टीकरण करना आवश्यक प्रतीत होता है–

अधिगम भौली रू. अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक विभिन्न प्रकार का ज्ञान, आदतें तथा मनोवृत्तियाँ प्राप्त करता है, जो कि साधारण जीवन की माँगों को पूरा करने के लिए आवश्यक है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए वह विभिन्न प्रकार की विधियों को अपनाता है। जैसे स्वतन्त्र रूप से अध्ययन, शिक्षक तथा अन्य से सहायता प्राप्त करना, साथियों से सहयोग लेना, शैक्षिक प्रक्रिया में दृढ़ता विकसितकरना, त्रुटियों को स्वीकार करना तथा परिमार्जित रूप से पुनः प्रस्तुत करना याअध्ययन समय की टालना, सृजनात्मकता आदि आती है, इसके अन्तर्गत प्रोफेसर वी0पी0 वर्मा के अनुसार निम्न प्रकर की शैलियाँ आती है।

शैक्षिक संसाधन रू. शैक्षिक संसाधन स्कूल प्रशासन को सुविधाजनक बनाने और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए शैक्षणिक वातावरण में उपलब्ध सभी मानव, सामग्री, गैर–भौतिक 5 ऑडियो–विजुअल स्कूल वातावरण और सामुदायिक सामग्री को संदर्भित करता है। उनमें शिक्षण को बहुत आसान बनाने और शिक्षार्थियों के लिए अधिक सार्थक और बोधगम्य बनाने के लिए स्कूल में उपयोग की जाने वाली अन्य मूलभूत सामग्री भी शामिल हैं। शिक्षा संसाधनों में वे सभी सामग्री शामिल हैं जो मानव और गैर मानव, खींची गई या फोटो खिंचवाती हैं, मैन्युअल रूप से या इलेक्ट्रॉनिक रूप से संचालित होती हैं, किताबें और शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली सभी संबंधित सामग्री (एनटीआई, 2006) शिक्षा संसाधनों में स्कूल में शिक्षक, समुदाय में मनुष्य, वास्तविक वस्तुएं, नमूना या मॉडल, चाक और डिस्प्ले बोर्ड, स्कूल भवन और लेआउट, बड़े पैमाने पर समुदाय और अन्य मूलभूत सामग्री जैसे पेंसिल, पेन, व्यायाम पुस्तकें आदि शामिल हैं। शिक्षार्थियों से सीखने की सुविधा के लिए किसी भी समय होने की उम्मीद की जाती है। शिक्षा संसाधन निस्संदेह एक अनुकूल शिक्षण–अधिगम वातावरण के विकास में महत्वपूर्ण हैं। इन संसाधनों का उपयोग सामग्री के बिना किसी भी व्यक्तिगत प्रयास की तुलना में शिक्षक को अधिक मूल्यवान और शक्तिशाली दिशा दे सकता है।

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता रू. जब व्यक्ति द्वारा अपने जीवन और परिस्थितियों को अपने नियंत्रण में रखने का प्रयास किया जाता है और वह सुख–दुख, भय–क्रोध, ईर्ष्या मोह आदि से प्रभावित नहीं होते वही व्यक्ति संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान कहलाता है। वर्तमान शताब्दी में सामाजिक एवं शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में बुद्धि की एक नई अवधारणा विकसित हुई है जो पुराने परम्परागत सिद्धांतों का स्थान ले रही है। इसे भावात्मक या संवेगात्मक बुद्धि कहा गया है। यह सामान्य बुद्धि से अधिक महत्वपूर्ण है।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 1, January -March 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

शैक्षिक उपलब्धि रू. शिक्षा के क्षेत्र में जो ज्ञान अर्जित किया जाता है उसे ही शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं। हर व्यक्ति जो शिक्षा से जुड़े रहते हैं अपनी शैक्षिक उपलब्धि को जानने की जिज्ञासा रखते हैं शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होने पर कार्य में गुणवत्ता की है तथा कार्य के प्रति उत्साह बढ़ता है। इसके विपरीत खराब शैक्षिक उपलब्धि होने पर व्यक्ति को कार्य के प्रति हतोत्साहित होना पड़ता है। विद्यालय में विद्यार्थी विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। कक्षा के सभी विद्यार्थियों का ज्ञान तथा ज्ञानार्जन करने की सीमा या प्रगति एक समान नहीं होती है। किसी कक्षा 7 विशेष में विद्यार्थियों ने इतनी मात्रा में ज्ञानार्जन या प्रगति की है उसका मूल्यांकन करना आवश्यक होता है। इसकी जांच जिस परीक्षण द्वारा की जाती है उसे ही उपलब्धि परीक्षा कहते हैं। विद्यार्थी का अंकपत्र ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रदर्शित करता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :- प्रत्येक व्यक्ति जिस किसी कार्य को करता है उसका कुछ न कुछ उद्देश्य निहित होता है। उद्देश्य के बिना वह कुछ भी कार्य नहीं करता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अधिगम शैली का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक संसाधनों एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :- प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोध अध्ययन को संपादित करने हेतु निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया –

1- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अधिगम शैली का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
3- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक संसाधनों एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन विधि :- प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित प्रतीत हौता है इसलिए शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में बिजनौर शहर में अध्ययनरत विभिन्न बिजनौर में सम्मिलित होने वाले 600 विद्याथियों को शहर में स्थित माध्यमिक स्तर के 300 वालक तथा 300 वालिकाओं का चयन किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :- प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने उद्देश्यों के अनुरूप उपकरणों की खोज की, अतः शोधकर्त्ता ने शोध पर्यवेक्षक एवं शोध क्षेत्र के अन्य अनुभवी विद्वानों से सम्पर्क किया तथा उनके परामर्श से मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया।

अध्ययन का परिसीमांकन :- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल बिजनौर शहर में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या :- प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित सीमायें निर्धारित हैं।

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 1, January -March 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

परिकल्पना परिक्षण :- 1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अधिगम शैली का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। इस सम्बन्ध में परिगणित मूल्यों को तालिका संख्या 1.0 में प्रस्तुत किया गया है -

तालिका संख्या -1.0

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
शहरी विद्यार्थी	320	68.41	19.72	2.21	0.05 = 1.96 0.01 = 2.59
ग्रामीण विद्यार्थी	280	70.98	20.05		

व्याख्या :- तालिका संख्या 1.0 में बिजनौर भाहर के विभिन्न माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले शहरी विद्यार्थी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली को दर्शाया गया है। तालिका में विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रम"ाः 68.41 एवं 19.72 प्राप्त हुआ है जबकि माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाली ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 70.98 एवं 20.05 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 2.21 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से अधिक है। अधिक सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पश्ट करता है। इससे सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले शहरी विद्यार्थी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पना परिक्षण - 2 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। इस सम्बन्ध में परिगणित मूल्यों को तालिका संख्या 2.0 में प्रस्तुत किया गया है -

तालिका संख्या - 2.0

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	320	141.78	24.06	0.96	0.05 =1.96 0.01 = 2.59
छात्राऐं	280	144.23	26.52		

व्याख्या :– तालिका संख्या 2.0 में बिजनौर शहर के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता को दर्शाया गया है। तालिका में विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले छात्रों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 141.78 एवं 24.06 प्राप्त हुआ है जबकि विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाली छात्राओं का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 144.23 एवं 26.52 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.96 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0. 05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना परिक्षण - 3 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक संसाधनों एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। इस सम्बन्ध में परिगणित मूल्यों को तालिका संख्या 3.0 में प्रस्तुत किया गया है -

Nrityanjali Multidisciplinary International Research Journal

Volume 2, Issue 1, January -March 2026

E-ISSN: 3108-1452

NMIRJ Website: https://nrityanjaliresearchjournal.com/home/ Email: info@nrityanjaliresearchjournal.com

तालिका संख्या - 3.0

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
शहरी विद्यार्थी	320	137.41	23.52	1.23	0.05 = 1.96 0.01 = 2.59
ग्रामीण विद्यार्थी	280	140.97	24.76		

व्याख्या :– तालिका संख्या 3.0 में बिजनौर शहर के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले शहरी विद्यार्थी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक संसाधनों को दर्शाया गया है। तालिका में विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 137.41 एवं 23.52 प्राप्त हुआ है जबकि विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाली ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 140. 97 एवं 24.76 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.23 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पश्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि बिजनौर जनपद के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले शहरी विद्यार्थी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक संसाधनों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Abdelrazek, O. H. G. (2016). Level of aspiration, critical thinking and future anxiety as predictors for the motivation to learn among a sample of students of Najran university. International Journal of Education and Research, 4(2), 61-70.

Alexander, S. C. P. (2011). Family environment externalizing and internalizing behaviors among adolescents in St. Lucia. Loma Linda University. Electronic Theses & Dissertations, Paper 18.

Borah, S. (2013). Family environment and Academic achievement of adolescent students of Jorhat District, Assam. Indian Journal of Education, Research, Experimentation and Innovation, 3(3).

Bhandari, S. (2014). A study of the level of aspirations among the adolescents. GHG Journal of Sixth Thought, 1(1), 40-42.

Dhingra, R. (2001). A study of certain selected variables (Family Environment and social adjustment) Related to hearing impaired children. Journal of human ecology, 22(1), 83-87.

अग्रवाल, सत्तार एवं जैन 2020 पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन, वा0 8, इश्यू 4, मार्च, पृ0 173-180

अहमद, एच0 (2012). 10+2 स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन के सन्दर्भ में उनके सतत् आन्तरिक मूल्यांकन (सी0सी0ई0) के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन. अप्रकाभित पी–एच0डी0 थीसिस, शिक्षा संकाय, अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगड।

अल्टेकर, वाई0 (2002). प्राइमरी स्कूलों में भाषा व गणित आदि विषयों के शिक्षण में रन्टत व परम्रागत अध्ययन–अध्यापन विधियों के प्रभाव का अध्ययन अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस, शिक्षा संकाय, राजीव गॉधी विश्वविद्यालय, इटानगर, अरूणांचल प्रदेश।

आसिफ, एम0 (2007). अलीगढ विश्वद्यालय के शोध छात्रों के धर्मनिरपेक्षता के प्रति दृष्टिकोण का उनके अकेलापन, भग्नाशा स्तर व आक्रमकता के सन्दर्भ में अध्ययन, अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस, अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

केवट आर0एन0. (2003) समेकित शिक्षा के अन्तर्गत सामान्य एवं विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् विकलांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन का अध्ययन. अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस, शिक्षा संकाय, छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ संख्या 109.

खरे, एम0 आर0 (2002). उत्तर–प्रदेश के मिर्जापुर जनपद के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस, शिक्षा संकाय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।